

बहुआयामी प्रतिभा के धनी रंगमंच, टीवी, फिल्म अभिनेता एवं कवि अखिलेंद्र मिश्र ने कहा हिन्दी रंगमंच को ‘ऑक्सीजन’ देने में सरकार करे पहल

खास मुलाकात

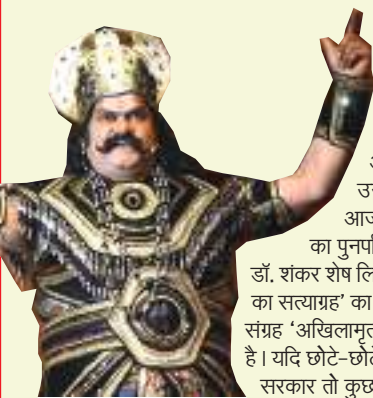
शासन ने बड़े-बड़े आलीशान ऑडिटोरियम बनाए जो रंगकर्मीयों की आर्थिक पहुंच से हैं दूर

हिन्दी बेल्ट का समाज नाटकों के प्रति नहीं है गंभीर, मात्र एक-दो फीसदी लोग संवेदनशील

आज भी रंगकर्म को आर्थिक मदद मिलती है कम चिरौरी, मान-मनुहार और चंदा ही है सहारा

सुरोजीत चैटर्जी

हिन्दी भाषा का प्रारूप विश्वस्तरीय हो चुका है। लेकिन नाटकों का अपना कोई बॉक्स ऑफिस नहीं है। हिन्दी बेल्ट में समाज नाटकों को गंभीरतापूर्वक नहीं लेता। मात्र एक-दो फीसदी लोग ही इस दिशा में गंभीर हैं। आज भी नाटकों की प्रस्तुति के लिए आर्थिक मदद बहुत कम मिलती है। चिरौरी, मान-मनुहार वगैरह कर चंदा जुटाने के लिए किसी प्रकार एक प्ले का मंचन करना संभव हो पाता है। नाटकों का टिकट खरीदना तो दूर की बात किसी को अपना नाटक दिखाने के लिए पास दो और वह आए तो वो एहसान जताना नहीं भूलता कि खासी व्यवस्तता के बावजूद मैं आपका प्ले देखने आया। तमाम शहरों में नाटकों के लिए उपयुक्त ऑडिटोरियम नहीं हैं। कमाल तो ये है कि सरकार ने कई शहरों में करोड़ों रुपये खर्च कर बड़े-



पत्तों में नहीं, पेड़ की जड़ों को पानी की जरूरत

बिहार के सिवान स्थित कुलवा गांव में जन्मे अखिलेंद्र को बाल्यकाल के उस दौर में नाटकों का चस्का लगा जब इस विधा को घर-परिवार और समाज हेतु दृष्टि से देखा था। दुर्गापूजा के मौके पर 'गवना के रात' से अभिनय यात्रा-आरंभ करने वाले अखिलेंद्र वर्तमान में भले ही छोटे-बड़े पदों के नामचीन अभिनेता हैं और 'चंद्रकांता' धारावाहिक के कूर सिंह या 'सरफरोश' फिल्म के मिची सेठ चरित्र समेत उनके तमाम अन्य कैरेक्टरर्स को दर्शक अब भी अपने दिल-दिमाग से भले न उतार पाए हों लेकिन उन्होंने आज भी रंगकर्म जारी रखा है। साथ ही इन दिनों वह लगभग डेढ़ घंटे की एकल प्रस्तुति 'स्वामी विवेकानंद का पुनर्पाठ' के माध्यम से विवेकानंद के सुने-अनुसुने प्रसंगों को अनूठे अंदाज में पेश कर रहे हैं। इसके अलावा डॉ. शंकर शेष लिखित 'एक और द्रोणाचार्य' एवं कैफ़ी आज़मी कृत 'अखिरी शमा' 35 साल से मंचित कर रहे हैं। 'मोटेराम का सत्याग्रह' का मंचल 30 वर्ष तक कर चुके हैं। आज भी कभी-कभी इसके मंचन का हिस्सा बनते हैं। उनकी कविताओं संग्रह 'अखिलाभूतम' खासा चर्चित है। एक सवाल के जवाब में बोले- भारतवर्ष में आज रंगकर्म एक अलग रूप में उभरा है। यदि छोटे-छोटे कस्बों में भी साहित्य और संस्कृति के प्रति संवेदनाएं हैं तो वहां नाटक किये जा रहे हैं। रंगमंच के लिए सरकार तो कुछ भी कर रही है वो पर्याप्त नहीं है। शासन नाटक को प्रोत्साहित करने के लिए आगे और इस विधा को सशक्त बनाने में योगदान दे। रिहर्सल के लिए भी स्थान उपलब्ध कराए। वास्तव में सिर्फ पत्तों को पानी देने से पेड़ हरे-भरे नहीं होते बल्कि पेड़ की जड़ों में पानी देने की आवश्यकता है। तभी रसास्वादन होगा।

ऑडिटोरियम न्यूनतम रेट पर रंगकर्मीयों को दिया जाए। इसके लिए सरकार को आगे आना पड़ेगा। भारत सरकार कानून बनाकर नाटक मंडलियों के लिए मंत्रालय बनाए। हमारी शिक्षा प्रणाली की विषय सूची में नाटक को शामिल किया जाए। प्रत्येक शिक्षण संस्थान में नाट्य विधा एक सब्जेक्ट के तौर पर सम्मिलित हो। वर्तमान में गिने-चुने विश्वविद्यालयों में ही नाटक को विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है जो पर्याप्त नहीं है। 'हिन्दी रंगमंच दिवस' पर बहुआयामी प्रतिभा के धनी रंगमंच, टीवी और फिल्म के सुविख्यात अभिनेता एवं कवि अखिलेंद्र मिश्र ने 'खास मुलाकात' में यह बात कही।



यूपी में हिन्दी रंगकर्म का परिदृश्य उत्साहजनक

एक सवाल के जवाब में अखिलेंद्र ने कहा कि 80 के दशक में जब टेलीविजन आया और हमलोग, रामायण आदि धारावाहिक वगैरह बनने लगे तो रंगमंचियों की चिंता बढ़ी। इस बारे में पृथ्वी थिएटर में एक बड़ी बैठक कर विचार-विमर्श किया गया कि टीवी की बढ़ती लोकप्रियता के चलते नाटकों पर संकट आ रहा है। लेकिन हुआ उससे उलट। नाटक और भी मजबूत हो गये। मुंबई में तो मराठी, गुजराती और अंग्रेजी भाषा के नाटकों के बाद अब हिन्दी नाटकों ने स्वयं को स्थापित कर लिया है। उधर, यूपी में भी रंगकर्म का परिदृश्य उत्साहजनक है। साहित्य और रंगकर्म की दिशा में बिहार को देखें तो वहां दूर-दराज के अलाकों में भी बहुत गंभीरता है। वैसे भी बिहार बुद्धिजीवियों की धरती है। आर्यभट्ट, चंद्रगुप्त, सम्राट अशोक, विद्यापति, चाणक्य, फणीश्वरनाथ रेणू, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसी की यह धरती साहित्य-संस्कृतिकर्मियों के लिए बेहद उपजाऊ है। लेकिन जातिवाद की राजनीति ने रंगकर्म को नुकसान पहुंचाया है। नाटकों के लिए पटना तो एक प्रकार से गढ़ ही है। इसके अलावा दरभंगा, बेगूसराय, बक्सर, हजारीबाग और चाईबासा आदि में भी रंगकर्म हो रहा है।



काशी में जन्मी थी हिन्दी रंगमंच की दुनिया



शहर के मध्य नागरी नाटक मंडली जहां अब भी नाटकों की शृंखला जीवंत



आज यानि (तीन अप्रैल) हिन्दी रंगमंच दिवस है, रंगमंच को अभिनय कला का नशा माना जाता है। जिसने भी इस दुनिया में कदम रखा, रंगमंच उसकी रूह में उतर गया। फिर वह चाहकर भी रंगमंच की दीवानगी से खुद को जुदा नहीं कर सका। दरअसल, रंगमंच इश्क का एक ऐसा दरिया है जिसकी गहराइयों में जिंदगी बसती है। वास्तव में यह जीवन का वो रंग है, जिसमें अभिनय की बारीकियां समाई होती है। यही कारण है कि लोगों का इससे कभी जुड़ाव कम नहीं हुआ। राज कपूर और शशि कपूर हिंदी फिल्मों के बड़े अभिनेता थे, पर उनकी जान पृथ्वी थिएटर में बसती थी। इसलिए कि रंगमंच ही वो माध्यम है, जहां अभिनय को तराशने का मौका मिलता है। रंगमंच की दुनिया भले ही पूरे विश्व में सजती हो लेकिन काशी ही एक ऐसा स्थान है जहां से हिन्दी रंगमंच ने अपनी यात्रा शुरू की।

अश्वनी कुमार श्रीवास्तव

वाराणसी। हिंदी रंगमंच दिवस प्रतिवर्ष तीन अप्रैल को मनाया जाता है। तीन अप्रैल 1868 की शाम बनारस में पहली बार शीतलाप्रसाद त्रिपाठी कृत हिन्दी नाटक 'जानकी मंगल' का मंचन

हुआ। जून 1967 में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास में पहली बार इस नाटक के मंचन को प्रामाणिक तौर पर पुष्ट किया। इंग्लैंड के 'एलिन इंडियन मेल' के आठ मई 1868 के अंक में भी उस नाटक के मंचन की जानकारी भी प्रकाशित हुई

थी। इसी आधार पर पहली बार शरद नागर ने ही हिन्दी रंगमंच दिवस की घोषणा तीन अप्रैल को की थी। हिंदी रंगमंच की स्थापना में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका तत्कालीन काशी नरेश ईश्वरीनारायण सिंह ने निभाई। उन दिनों नाट्य क्षेत्र में ब्रितानी माडल ज्यादा

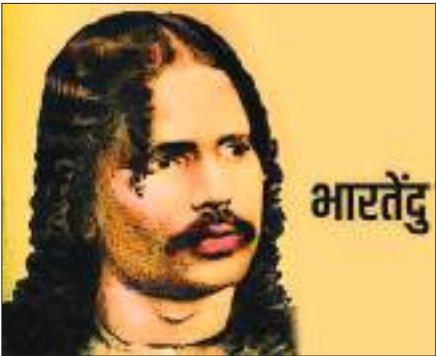
मल्टीप्लेक्स की दुनिया में रंगमंच के संवाद हैं जीवंत

काशी में तीन अप्रैल 1868 की शाम 'जानकी मंगल' हिन्दी नाटक का हुआ था मंचन

बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अचानक एक घंटे में संवाद याद कर मंचन को कर दिया था जीवंत

5जी की स्पीड की दुनिया में रंगमंच के कलाकारों ने अब भी बना रखी है अपनी पहचान

रंगमंच की दुनिया से आने वाले कलाकारों ने ही छोटे व रुपहले पर्दे पर बनायी पहचान



हिन्दी रंगमंच के पितामह थे बाबू भारतेन्दु

आधुनिक भारत की बात करें, तो भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने रंगमंच में प्रयोग का दौर शुरू किया, उन्हें तो हिंदी रंगमंच का पितामह कहा जाता है। आज भी उनके नाटकों का मंचन किया जाता है। भारतेन्दु ने अंधे नगरी चौधत राजा, नील देवी, भारत-दुर्दशा जैसे नाटकों का लेखन किया। लेकिन, कहते हैं न कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और बदलती तकनीक ने हर क्षेत्र में अपना प्रभाव डाला। कहा भी गया कि जो समाज जितना प्रगतिशील होगा वह उतना ही विकसित होगा। साहित्य के क्षेत्र में भी निरंतर परिवर्तन होते आ रहे हैं। नई नई तकनीकों का प्रयोग रंगमंच में भी दिखाई देने लगा है।

अचानक मंच मिला तो पीछे नहीं हटे भारतेन्दु बाबू

मन में रंगमंच का लाना बाना बुनते हुए मंच मिलने का इंतजार करने वाले बाबू भारतेन्दु हरिश्चंद्र को जब अचानक मंच पर हुनर दिखाने का मौका मिला तो फिर वह पीछ नहीं हटे, और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखे, जानकी मंगल नाटक की प्रस्तुति के ठीक पूर्व लक्ष्मण की भूमिका निभाने वाला लड़का बीमार पड़ गया। नाटक स्थगित होने की नौबत आ गई। तभी 18 वर्षीय युवा हरिश्चंद्र वहां पहुंचे। उन्होंने लक्ष्मण की भूमिका करने को कहा। महाराज ने संवाद याद होना असंभव बताया तो उन्होंने घंटे भर में याद कर सुना दिया। फिर नाटक खेला गया। भारतेन्दु के मन में हिंदी नाटक लेखन और उसके अभिनय का उत्साह जगा और उन्होंने खुद नाटक लिखना शुरू कर दिया। अपना नाट्य दल भी बनाया जिसमें राधाकृष्ण दास, रविदत्त शुक्ल, दामोदर शास्त्री, पं. चित्तामणि, पं. माणिक लाल जोशी आदि थे। उन्होंने वाराणसी और बलिया के वंदरी मेले में नाट्य प्रस्तुतियां दीं। इसके बाद तो काशी में नाटक करने के लिए नाट्य संस्थाओं का बनना आरम्भ हो गया।

बच्चों व युवाओं को आर्ट में पारंगत करने की चाहत

हर माह गैलरी में लगायी जाती है कला प्रदर्शनी

माइल्स स्टोन साबित हो रही है रामछाटपार की गैलरी

कलाविद् प्रो. मदन लाल से खास मुलाकात

राधेश्याम कमल

वाराणसी। रामछाटपार शिल्प न्यास के संयोजक एवं काशी हिंदू विश्वविद्यालय दृश्य कला संकाय के सेवानिवृत्त प्रो. मदन लाल बच्चों एवं युवाओं को कला के क्षेत्र में और भी आगे ले जाना चाहते हैं। इसके लिए वे पिछले कई वर्षों से प्रयासरत हैं। वे बनारस के कलाकारों से लेकर पूरी दुनिया के आर्ट कलाकारों का यहां समागम कर रहे हैं। उन्होंने महेशपुर सामनेघाट में आर्ट गैलरी भी खोल रखी है। इस आर्ट गैलरी में हर माह कला प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। उनका मानना है कि यह आर्ट गैलरी बच्चों एवं युवाओं के लिए मील का पथर साबित हो रही है जहां पर उनकी आशाओं का किरण झलकती है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के दृश्य कला संकाय में लगभग 29 वर्षों तक अध्यापन करने वाले प्रो. मदन लाल ने कला के क्षेत्र में अब तक सैकड़ों शिष्यों को पारंगत किया। जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में रह कर कला के मुख



धारा में जुड़ कर ख्याति अर्जित कर रहे हैं। प्रो. मदन लाल ने बीएचयू में 1978 में फाइन आर्ट किया। बाद में 1981 में बड़ौदा विश्वविद्यालय से पोस्ट ग्रेजुएट तथा टोक्यो (जापान) से 1988 में डबल पीजी पढ़ाई पूरी की। वे 1990 से लेकर 2019 तक बीएचयू फाइन आर्ट में अध्यापन करते रहे। कलाविद् प्रो. मदन लाल से जनसंदेश टाइम्स ने खास मुलाकात की। पेश से उनसे बातचीत के प्रमुख अंश।

बच्चे से लेकर दिवंगत कलाकारों की भी रखी गई हैं कलाकृतियां

कलाविद् प्रो. मदन लाल बताते हैं कि महेशपुर कालोनी स्थित 1999 से रामछाटपार शिल्प न्यास कला केन्द्र चल रहा है। इसमें आधुनिक संग्रहालय, गैलरी व देश-विदेश के कलाकारों की बनायी गई कलाकृतियां रखी गई हैं। यहां पर तीन साल के बच्चे से लेकर दिवंगत कलाकारों की भी कलाकृतियां रखी गई हैं। वे बताते हैं कि हम यहां पर कार्य करके यह दिखाना चाहते हैं कि लोग बच्चों व युवाओं की कलाकृतियों को देख कर उसे समझें।

बाल कला दिवस मना रहे हैं

वे बताते हैं कि जैसे 19 नवम्बर को हम नेहरूजी का जन्मदिन मनाते हैं उसी तरह हम संस्था में बाल कला दिवस मनाते हैं। पूरे देश में शायद बाल कला दिवस का इस तरह का आयोजन नहीं होता है। इस बार

पांच अप्रैल को बाल कला उत्सव मनाया जायेगा। इसका उद्घाटन पद्मश्री बीएचयू की डा. चूड़ामणि गोपाल करेंगी। यह बाल कला उत्सव 6 से 13 अप्रैल तक चलेगी। इसमें तीन साल से 14 साल तक के बच्चे भागीदारी करके गैलरी में ही पेंटिंग बनायेंगे। हम उनको कलर व ब्रशों सब सामान देंगे। इसके लिए बच्चों को कोई सब्जेक्ट नहीं दिया जाता है। बच्चे अपने मन से कलाकृतियां या पेंटिंग बनाते हैं। इस आयोजन के लिए हम पर हफ्ते से गैलरी में जुटे हुए हैं। इसमें प्रार्थना, अनवर, मनोज भी लगे हुए हैं।

साल भर में होते हैं 30 विविध आयोजन

रामछाटपार शिल्प न्यास महेशपुर में साल भर में लगभग 30 आयोजन होते हैं। इससे युवा कलाकार व बच्चे काफी लाभान्वित होते हैं। यहां पर हर पूर्णिमा पर गंगा तट पर संगीत का आयोजन होता है। जिसमें देश के मूर्धन्य कलाकारों की भागीदारी होती है। इस वर्ष भी इसका 20वां महीना है। इसी तरह हम आर्ट फेयर भी लगाते हैं। इसमें विशेष रूप से कला प्रदर्शनी लगायी जाती है। कलाकारों की कलाकृतियों को गैलरी में रखकर प्रदर्शित करते हैं। हम इसके माध्यम से गंगा पार में रेत में आकृति की खोज प्रतिगोषिता करते हैं जो शायद कहीं नहीं होता है। रेत में आकृति की खोज का इस साल 21वां साल पूरा होगा।



कला पर व्याख्यान के लिए विदेशों की हुई यात्रा

वे बताते हैं कि कला संबंधित व्याख्यान देने के लिए विदेशों में कई यात्राएं हुई। उनकी पहली जापान यात्रा 1985 में हुई। इसके बाद वे 15 बार जापान की यात्रा पर गये। इसके बाद वे दो बार चाइना, कोरिया, थाईलैंड, ताइवान, सिंगापुर, नीदरलैंड, इटली, फ्रांस भी गये। 2004 में वे यूरोप गये। इसके बाद जर्मनी, पेरिस, आस्ट्रिया गये। गत फरवरी 2023 में वे यूरोप गये तो उनकी धर्मपत्नी राजश्री गुप्ता भी थीं। वे बताते हैं कि विदेशों में जाकर हमने संग्रहालयों को देखा और उसी आधार पर हमने रामछाटपार शिल्प न्यास कला गैलरी का निर्माण किया।